■ रपट

विद्या भवन में नई तालीम की यात्रा

कालू राम शर्मा

विद्या भवन की संरचना में झांककर देखें, तो इसमें गांधी की विचारधारा और गांधी की नई तालीम की सुगंध आती है। विद्या भवन अपनी स्थापना के दौरान से ही गांधी के विचारों से ओतप्रोत रहा है। आजादी के पहले, औपनिवेशिक ताकतों के चलते विद्या भवन की स्थापना एक स्कूल के माध्यम से की गई, जहां लड़कियां और लड़के एक साथ अध्ययन कर सकें। देश में जहां एक ओर नई तालीम का ताना–बाना बुना जा रहा था उसी दौरान रामगिरि में एक स्कूल की स्थापना की गई। रामगिरि स्कूल में प्रारंभिक तौर पर बच्चों की संख्या सीमित रही मगर स्कूल ढांचागत सुविधाओं के मामले में समृद्ध था और आज भी है। विद्या भवन बुनियादी स्कूल, उदयपुर–माउंटआबू सड़क पर उदयपुर शहर से लगभग तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। स्कूल को अगर देखें तो यहां खेती–किसानी के लिए काफी जमीन निर्धारित की गई। स्कूल में लगे शिलालेख से ज्ञात होता है कि इसकी नींव मेवाड़ प्रेसिडेंसी के अध्यक्ष राघवाचार्य ने रखी और उद्घाटन नई तालीम की योजना रचने वाले गांधी के सहयोगी श्री जाकिर हुसैन ने 23 अप्रैल 1941 को किया। उल्लेखनीय है कि जाकिर हुसैन ने वर्धा स्कीम की योजना को अमलीजामा दिया था। विद्या भवन बुनियादी स्कूल रामगिरि में यह वह अवसर था जब बुनियादी शिक्षा को प्रायोगिक तौर पर समझने की कोशिश की जा रही थी। स्व. श्री दयालचंद्र सोनी के शब्दों में "हम नई तालीम को अपने स्कूल में श्रद्धापूर्वक अपनाकर देखेंगे" यह बात सही साबित हुई। इस प्रकार नई तालीम को आधार बनाकर बच्चों को शिक्षा देते हुए पूरे देश के नक्शे पर विद्या भवन एक सशक्त संस्थान बनकर उभरा। जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में शिक्षा मंत्री रहे कालू लाल श्रीमाली ने रूरल इंस्टीट्यूट की स्थापना इस मकसद से की कि इस स्कूल में पढ़कर उच्च शिक्षा हासिल करने वाले छात्र यहां बुनियादी शिक्षा के नज़रिए से शिक्षा प्राप्त कर समाज में योगदान कर सकें। इसी लिहाज से रूरल इंस्टीट्यूट में पॉलिटेक्निक कॉलेज की भी नींव रखी। इस प्रकार रामगिरि समेत आसपास के स्कूलों के छात्रों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का एक सुलभ मार्ग प्रशस्त हुआ।

आज़ादी के बाद, धीरे–धीरे रामगिरि स्कूल में नई तालीम की पकड़ ढीली पड़ती गई मगर नई तालीम की आत्मा जरूर मौजूद रही। नब्बे के दशक के उत्तरार्ध में विद्या भवन ने नई तालीम के महत्व और प्रासंगिकता को समझते हुए इसे वर्तमान संदर्भ में पुनर्परिभाषित करने का प्रयास किया। इस प्रयास में यह समझने की कोशिश की कि आखिर वे क्या वजहें हैं, जो नई तालीम को व्यापक करने में बाधक हैं। साथ ही एक संस्थान के रूप में या कहें कि एक राज्य के रूप में अर्थपूर्ण शिक्षा या कहें कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को अर्जित करने का रास्ता क्या हो। इस दौर में विद्या भवन अपनी संस्थाओं को शैक्षिक रूप से सशक्त करने के साथ–साथ देश के अन्य राज्यों में सर्व साधारण की शिक्षा में गुणात्मक सुधार को लेकर राज्य सरकारों के साथ साझेदारी के रूप में हस्तक्षेप

करने के प्रयास में जुटा हुआ था। विभिन्न राज्यों की एससीईआरटी, डायट्स व स्कूली शिक्षकों के साथ पुस्तक लेखन एवं शिक्षक प्रशिक्षण के कार्य, प्रमुख रूप से गिनाए जा सकते हैं। चाहे अपनी संस्थाओं की प्रदेश स्तर पर भागीदारी की बात हो इसमें हमने बुनियादी शिक्षा के तत्वों को समझते हुए, उन्हें आज के संदर्भ में व्यापक करने की पेशकश की। इस लेख में आजादी के बाद नवउदारवादी और भूमंडलीकरण के चलते हम बुनियादी शिक्षा को किस तरह से देखते हैं, इसकी एक झलक देने का प्रयास है।

जब हम अर्थपूर्ण शिक्षा की बात करते हैं तो हमारे सामने बुनियादी शिक्षा का दर्शन मजबूत रूप में सामने आता है। किसी भी समाज को अपने संदर्भ में पैर जमाने व आगे बढ़ने के लिए इसके सिद्धान्त उपयोगी हैं। फिर भी आज़ादी के बाद से और बहुत सारे लोगों के प्रयासों के बावजूद भी इसको उस स्वरूप में नहीं ला पाए जिस स्वरूप में यह सभी स्कूलों के लिए संभव बन सके। अब तक बुनियादी शिक्षा को अपनाने को लेकर देश भर में किस–किस प्रकार से कार्य किया गया? वे क्या कारण हैं कि बुनियादी शिक्षा एक ठोस स्वरूप नहीं ले पाई और मुख्यधारा की शिक्षा अथवा उसका मान्य हिस्सा नहीं बन पाई? इन सब सवालों पर विद्या भवन के प्रयास ने शिक्षा से जुड़े लोगों के बीच एक बहस को शुरू किया है। इन सवालों पर विमर्श की प्रक्रिया से बुनियादी शिक्षा की खूबियों और सीमाओं को पहचानने का अवसर मिला है। साथ ही बुनियादी शिक्षा को आज के संदर्भ में पुनर्परिभाषीकरण करने में काफी हद तक आगे बढ़ सके हैं।

बुनियादी शिक्षा को आज के संदर्भ में अपनाते हुए इसके समस्त पहलुओं को गंभीरतापूर्वक समझने का प्रयास करने की आवश्यकता महसूस की गई। कुछ प्रश्न अतिआवश्यक हैं, शिक्षा की आवश्यकता क्यों है? शिक्षा की समाज में क्या भूमिका होनी चाहिए, शिक्षा क्या है, इसकी प्रक्रिया क्या हो? इन सभी प्रश्नों को बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में देखने से कई महत्वपूर्ण सिद्धान्त मिलते हैं। विद्या भवन के प्रयास ने इन मसलों को बुनियादी शिक्षा के दायरे में परियोजना के प्रथम चरण से ही खंगालने का प्रयास किया है। जब हम बालकेंद्रित शिक्षा की बात करते हैं, तो उसके कई निहितार्थ हैं। शिक्षा को बच्चों के संदर्भ व अनुभव में रचा जाना चाहिए, उन्हें ठोस संदर्भों व एक स्तर पर मूर्त चीजों के साथ अंतःक्रिया करने के अवसर दिए जाएं, सीखने की आजादी दी जाए व यह समझ हो कि बच्चा स्कूल आता है, तो वह बहुत कुछ जानता है। इन सब मसलों पर विद्या भवन की सभी सम्बन्धित संस्थाओं को जोड़कर हम एक सार्थक संवाद स्थापित कर आगे बढ़ पाए हैं।

बुनियादी शिक्षा में कार्य को स्कूल में केंद्रीय स्थान क्यों दिया गया, इस बात का निर्माणवादी दृष्टिकोण से भी संदर्भ है। निर्माणवादी दायरे में बच्चा खुद ज्ञान का निर्माण करता है। उसे अपने विचारों पर चिंतन–मनन करने, उनके विश्लेषण, उपयोगिता की परख करने की आवश्यकता है। खोजबीन व मनन साथ–साथ चलते हैं और ठोस अनुभवों की सबसे अच्छी बुनियाद तब पड़ती है, जब बच्चे कुछ बना रहे हों व कर रहे हों। इसके लिए बच्चों को कुछ कार्य करने की, सृजन करने की व बनाने की जरूरत है। यह बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त के अनुसार है जिसमें बच्चे को खुद अपने हाथों से कार्य करना होगा। यह प्रक्रिया बच्चे के शरीर की विभिन्न इंद्रियों को भी सक्रिय रहने के अवसर देती है। बच्चा अपने स्तर पर कुछ रचे और रचने के दौरान वह जिन प्रक्रियाओं से गुजरे, उनमें से ज्ञान अर्जन करे। यदि बच्चे को कुछ रचने का अवसर दिया जाता है तो रटंत शिक्षा से छुट्टी पाई जा सकती है। यानी रचनात्मक परिप्रेक्ष्य में सीखना बच्चे के लिए अपने ज्ञान के निर्माण की एक प्रक्रिया है। पूछताछ, अन्वेषण, प्रश्न पूछना,

वाद–विवाद, व्यावहारिक प्रयोग व ऐसा चिंतन जिससे सिद्धांत बन सके और विचार व स्थितियों की रचना हो सके, ये सभी बच्चों की सक्रिय व्यस्तता को सुनिश्चित करते हैं। समूह में काम करने में व चीजें बनाने में इस सबकी जरूरत है। अच्छी शिक्षा को सुनिश्चित करना है, तो बच्चों को ऐसे अवसर प्रदान किए जाएं जिनमें वह प्रश्न पूछकर, चर्चा एवं चिंतन कर अवधारणाओं को आत्मसात कर सकें।

सीखने की प्रक्रिया का एक और अभिन्न अंग है आसपास के वातावरण, प्रकृति, चीजों व लोगों से कार्य व भाषा दोनों के माध्यम से अंतःक्रिया करना। बच्चे का समुदाय और उसका स्थानीय वातावरण सीखने में अहम भूमिका अदा करता है। परिवेश के साथ अंतःक्रिया करके ही बच्चा ज्ञान सृजित करता है और जीवन में सार्थकता पाता है। हालांकि पाठ्यपुस्तकों की संकल्पना और शिक्षा–शास्त्रीय व्यवहार में हमेशा से ही इस समझ की अवहेलना की जाती रही है। बुनियादी शिक्षा को प्रासंगिक बनाने का अर्थ यही है कि सीखने को बच्चे के परिवेश से जोड़ा जाए। स्कूल तथा बच्चे के प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण व स्कूल के बीच की सीमा रेखा को कमजोर किया जाए। यह केवल इसलिए नहीं कि अपने परिवेश में बच्चों का अपना अनुभव ज्ञान के क्षेत्र में प्रवेश का बेहतर माध्यम होता है बल्कि इसीलिए भी कि ज्ञान का मतलब ही दुनिया से जुड़ना है।

बुनियादी शिक्षा के मूल में जो तथ्य है वह यह कि शिक्षा प्राप्त करते हुए बच्चे के हाथ, दिमाग एवं दिल तीनों की भागीदारी हो। अतः बच्चे को हाथों से कार्य करने के अवसर मिले, तो हस्तकौशल का विकास होगा और किसी चीज का सृजन कर सकेगा। इसी प्रकार से बच्चे के पास सोचने के लिए दिमाग है। जब बच्चा हाथों से कार्य करेगा तो उसके बारे में सोचने की प्रक्रिया निरंतर चलती रहेगी। इसी प्रकार से जब वह अपनी दिलचस्पी का कार्य करेगा तो उसका भावनात्मक जुड़ाव होगा। इस तरह से बुनियादी शिक्षा बच्चे के दिल, दिमाग और हाथों इन तीनों के उपयोग और उनके विकास की पहल करती है। जाहिर है कि बच्चा हाथों से कार्य करेगा तो उसका शारीरिक विकास भी होगा।

हम बुनियादी शिक्षा के इस एक पहलू को पकड़कर बाकी के आयामों को अपनाने की दिशा में आगे बढ़ने में सफल हुए हैं। जब बच्चे को हाथों से कोई चीज का सृजन करना है तो उसको कई प्रक्रियाओं से गुजरना होगा। बच्चा कार्य करते हुए अपने परिवेश, समाज से अंतःक्रिया करता है। जब वह कार्य करता है तो समूह भावना का विकास भी होता है।

इस प्रकार से बच्चा शिक्षा प्राप्त करते हुए, नैतिक मूल्यों की सीख भी सही अर्थों में अपने आचरण में उतारता है। जब बच्चा कार्य करता है तो उसके मन में शांति के भाव पैदा होते हैं। अहिंसा से जुड़े हुए भाव होते हैं। मेहनत एक नैतिक ताकत है। जब बच्चा शारीरिक श्रम और कार्य करता है तो उसमें समस्याओं से जूझने और उनको हल करने की क्षमता का विकास भी होता है।

बुनियादी शिक्षा परियोजना के चरण

विद्या भवन ने बुनियादी शिक्षा के मूल सिद्धान्तों को आज के संदर्भ में समझने, प्रयोग करने और पुनः अपनाने की दिशा में इस परियोजना के तीन चरणों में काम व प्रयास किया गया है। हमारा यह विश्वास है कि सार्थक शिक्षा की ओर बढ़ने की राह बुनियादी शिक्षा से हमें मिल सकती है। किन्तु इसका जमीनी स्वरूप क्या होगा, कैसे बनेगा और यह ज्यादा व्यापक स्तर पर कैसे जाएगा, इस पर लगातार विचार हो रहा है व नये रास्तों की तलाश की जा रही है।

प्रथम चरण

प्रथम चरण में प्रमुख रूप से इस सवाल पर समझ

बनाने की बात थी कि शिक्षा क्या है व इसमें बुनियादी शिक्षा से क्या दिशा मिलती है? आजादी के बाद से ही शिक्षा के सवाल पर काफी चर्चाएं होती रही हैं व बुनियादी शिक्षा को दायरे में रखकर सोचने से कई महत्वपूर्ण सिद्धान्त मिलते हैं।

जब बच्चा बुनियादी स्कूल से शिक्षा पाकर बाहर निकलेगा, तो उसमें विकास की एक समझ होगी। उसमें भागीदारी की भावना होगी। टीम भावना का विकास होगा, जिसमें श्रम के प्रति सम्मान भी समाया होगा। बच्चों में आत्मविश्वास का विकास होगा। हाथों से किए जाने वाले कामों के माध्यम से बच्चों में कौशलों का विकास करना और उत्पादक काम करना बुनियादी शिक्षा का अहम मकसद है। यह आज के सामाजिक संदर्भ में आवश्यक है।

विद्या भवन ने इस चरण में यह भी समझा कि उत्पादक कामों से शिक्षा का रिश्ता दूर होता जा रहा है। और महज डिग्री लेने की ओर रुझान बढ़ता जा रहा है। एक आम स्कूल, बच्चों को सुनहरे अवसर उपलब्ध कराने में असमर्थ पाता है। बुनियादी शिक्षा के माध्यम से हम शिक्षा को अर्थपूर्ण शिक्षा के दायरे में लाना चाहते हैं। इसमें यह भी शामिल है कि समाज की स्कूल में भागीदारी बने।

बुनियादी स्कूल में शिक्षा के साथ–साथ हम कुछ उद्योगों के माध्यम से बच्चों को अर्थव्यवस्था आदि के बारे में समझ विकसित करना चाहते हैं। साथ ही इन उद्योगों के माध्यम से बच्चों में हुनर का विकास होगा, जिससे वे सक्षम बन सकेंगे।

दूसरा चरण

इस चरण में स्कूल के दायरे को अर्थपूर्ण शिक्षा के दायरे में व्यापक बनाना और शिक्षा को संस्कृति, समाज और समाज की सच्चाइयों से जोड़ना है।

स्कूली शिक्षा के संदर्भ में और भी संभावनाओं को तलाशना और उनको अपनाना इस चरण का लक्ष्य रहा है ताकि अर्थपूर्ण शिक्षा के लक्ष्यों को हासिल किया जा सके।

बुनियादी स्कूल रामगिरि को संदर्भ केंद्र के रूप मे ंविकसित करना ताकि आसपास के अन्य स्कूलों को बुनियादी शिक्षा को अपनाने के लिए प्रेरित किया जा सके और दूसरी ओर वैकल्पिक शिक्षा के इस अनुभव को व्यापक स्तर पर संवाद का एक जरिया बनाया जा सके।

स्कूल और समाज के रिश्ते को समझना और मजबूत बनाना इस चरण का मुख्य लक्ष्य था। बेशक, यह कार्य चुनौतीपूर्ण और कठिन है। स्कूल को समाज से परे रखकर शिक्षा की बात करना बेमानी लगता है। अतः समाज को सिखाने के बजाए समाज से हम क्या और कैसे सीखें, यह महत्वपूर्ण है। कोई भी स्कूली पाठ्यक्रम तब तक अधूरा है जब तक वह समाज से नहीं जुड़ता। इसके लिए बुनियादी स्कूल के बच्चे और शिक्षक समाज के साथ अंतःक्रिया कर सकें और पाठयक्रम को समाज के साथ जोड़ सकें, इस पर गहनता से कार्य किया गया। समाज में जाकर सीखने के लिए कुछ उपकरण बनाए गए। एक तो सर्वे करना, गांव–मोहल्लों में जाकर समस्याओं को समझने के लिए बातचीत करना, पुस्तकालय के माध्यम से संवाद करना, प्रमुख है।

हम बालकेंद्रित शिक्षा की बात तो करते हैं मगर उसका गुणगान करते हुए बच्चों पर ज्ञान व समझ को थोपा जाता है। बालकेंद्रित शिक्षा का एक प्रमुख पहलू है बच्चे क्या सीखना चाहते हैं। उनके सीखने के मसले क्या–क्या हैं। हालांकि समाज की बात जब करते हैं तो वह भी उन मसलों से जोड़ने की ही कवायद है जो उनके संदर्भ के हैं। इस पूरे मामले को लेकर विद्या भवन ने समझ बनाने की कोशिश की है।

इस बात को समझना कि शिक्षक के सान्निध्य में

बच्चे कैसे सीखते हैं। दरअसल, शिक्षा के सिद्धांतों को शिक्षक प्रशिक्षणों में पढ़ा तो जाता है मगर उन्हें कक्षा–कक्ष में कैसे अपनाया जाए यह खाई विकराल रूप प्राप्त कर चुकी है। इस खाई को पाटना बेहद जरूरी लगता है। इस कार्य के दौरान विद्या भवन ने शिक्षा के सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप देने की कोशिश की।

तीसरा चरण

इस परियोजना के पिछले दो चरणों में बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में जो भी अनुभव व समझ प्राप्त हुई है उसका लोकव्यापीकरण करना इस चरण का मुख्य लक्ष्य रहा है। इस चरण में राजस्थान राज्य की प्रशिक्षण संस्थाओं के साथ, अन्य स्कूलों में बुनियादी शिक्षा के फैलाव के लिए प्रयास किए गए।

विद्या भवन आईएएसई एवं पॉलिटेक्निक महाविद्यालय ने साथ मिलकर बुनियादी शिक्षा की गतिविधियों का राजस्थान राज्य के चुने हुए जिलों में फैलाव की दिशा में कार्य किया गया।

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, एसआईईआरटी एवं डाइट्स के माध्यम से इस विचार के कुछ पहलुओं का फैलाव करने की कोशिश की गई।

साथ ही बुनियादी शिक्षा की अवधारणा को राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने की कोशिश आज भी जारी है।

शिक्षा से जुड़े मसलों के बारे में क्रियात्मक शोध कार्य भी किया गया। इस संदर्भ में कक्षा–कक्ष में सीखने–सिखाने को लेकर कुछ शोध की गई है।

आज के संदर्भ में बुनियादी शिक्षा को अपनाते हुए हम जो हासिल कर पाए हैं उन पर एक नजर डालना लाजिमी होगा।

कक्षा के ढांचे में बदलाव

- पाठ्यपुस्तकीय शिक्षण सर्वमान्य शिक्षण नहीं, सीखने के लिए कक्षाओं में बच्चों के द्वारा अपने संदर्भ की पुस्तकों का उपयोग किया जाता है।
- बच्चों को हाथों से रचने के अवसर उपलब्ध कराए जाते हैं।
- बच्चों को अपने परिवेश में ले जाया जाता है जहां उनको विभिन्न प्रकार के कार्य करने को प्रेरित किया जाता है।
- बच्चों को सवाल पूछने के लिए प्रेरित किया जाता है। ज्ञान के निर्माण पर कोई भी बच्चा सवाल कर सकता है।
- बच्चे को असहमति जताने का पूरा अधिकार होता है।
- बच्चों की सीखने में सक्रिय भागीदारी होती है।
- प्रतियोगिता के बजाए सहयोगपूर्ण क्रियाकलाप और सामूहिक विकास को तवज्जौ दी जाती है।
- बच्चों की दिलचस्पी, सीखने की रणनीति और विविधिता को मान्यता दी जाती है।
- सीखने की प्रक्रिया को बच्चे के संदर्भ से जोड़ने का प्रयास किया जाता है।

पाठ्यक्रम एवं विषयवस्तु

विगत वर्षों में यह समझने का प्रयास किया है कि बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम क्या हो? कुछ वर्कशीट्स भी तैयार की गई। विद्या भवन द्वारा बुनियादी शिक्षा के दायरे में उद्योग केंद्रित शिक्षण पर कार्यपुस्तकों की श्रृंखला का प्रकाशन किया गया है। साथ ही उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए शिक्षण सामग्री 'कुछ करें' शीर्षक से प्रकाशित की गई। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम की रचना करने का प्रयास भी किया जा रहा है। बुनियादी शाला के शिक्षकों के साथ पाठ्यक्रम की रचना करने संबंधी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता रहा है। विद्या भवन में गठित रिसर्च फोरम के तत्वावधान में सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को समझने के लिए शिक्षकों के द्वारा

एक्शन रिसर्च की जाती है। रिसर्च फोरम के तहत कक्षा–कक्ष की उन बारीकियों को समझने के लिए एक्शन रिसर्च की गई हैं, जिन्हें समय–समय पर अपनी पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जाता रहा है।

गांधीवादी शिक्षा केंद्र की स्थापना

विद्या भवन का मानना है कि बुनियादी शिक्षा आज भी प्रासंगिक है। अब हमारी समझ और भी पुख्ता हो गई कि गांधी ने बुनियादी शिक्षा को लेकर अपने जमाने के लिए जो बातें कही थीं उनको यथावत लागू करना उचित नहीं होगा। हालांकि यह बात खुद गांधी ने भी अलग–अलग मंचों पर कही थी कि बुनियादी शिक्षा को कहीं भी हूबहु लागू करना अप्रासंगिक होगा। इस समझ के चलते गांधी के शिक्षा के सिद्धांतों को आज के संदर्भ में बड़ी सावधानी से टटोलने और उपयोग करने की जरूरत है।

अब तक बुनियादी शिक्षा को लेकर हमारी जो सोच बनी है, जो भी उपलब्धियां हासिल की हैं उनके आधार पर मनोबल बढ़ा है। तीसरे चरण में कार्य करते हुए हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती प्रकट हुई, वह यह कि बुनियादी शिक्षा को सर्वसाधारण की शिक्षा के दायरे में लाने के लिए हमें सघन रूप से कार्य करने की जरूरत है। परियोजना के दूसरे चरण में हमने बुनियादी शिक्षा संदर्भ केंद्र की स्थापना की थी जिसके तहत बुनियादी स्कूल के माध्यम से समाज के साथ रिश्ता कायम किया और आसपास की स्कूलों में बुनियादी शिक्षा को अपनाने के लिए प्रेरित किया। तीसरे चरण में हमने जब इस विचार को राजस्थान समेत अन्य राज्यों की जिला प्रशिक्षण संस्थानों और उनकी लेब एरिया की स्कूलों में संवाद करने का प्रयास किया तो अहसास हुआ कि बुनियादी शिक्षा दर्शन के कैनवास को और व्यापक करने की आवश्यकता है। साथ ही यह भी महसूस होता है कि गांधी जी ने संपूर्ण मानव जाति के उत्थान के लिए रास्ता बताया है। इस लिहाज से गांधी के संपूर्ण दर्शन को समझना भी जरूरी है। उल्लेखनीय है कि विद्या भवन सोसायटी गांधीवादी विचारधारा की नैतिक विरासत का उत्तराधिकारी रहा है। विद्या भवन सोसायटी उस दौर का प्रतिनिधित्व करती है जबकि साम्राज्यवादी एजेंडे को चुनौती देने के लिए एक नई शिक्षा प्रणाली बुनियादी शिक्षा–गढ़ी गई। हालांकि आजादी के बाद भी नीति निर्माताओं ने गांधी के सार तत्वों को अनदेखा किया मगर आज भी उनके पास यह कहते रहने के कि गांधी विचार ही उनकी प्रेरणा के स्रोत हैं, कोई विकल्प नहीं है। गांधीवादी दर्शन के पीछे ऐसी ही नैतिक शक्ति छिपी हुई है।

बुनियादी शिक्षा की इस पूरी यात्रा में जितनी चीजों का जिक्र किया गया है उससे कहीं ज्यादा छूटी हैं। और वे छूटी हुई चीजें काफी महत्वपूर्ण हैं। उन छूटी हुई चीजों की भी पहचान कर उन पर निरंतर संवाद बनाने की कोशिश कभी और।

कालू राम शर्मा : लंबे समय तक एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से जुड़े रहे। विद्या भवन में बुनियादी शिक्षा परियोजना में संलग्न रहे। वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन, देहरादून में कार्यरत।